सरधना चर्च, औघड़नाथ मंदिर, हस्तिनापुर÷
SARDHANA CHURCH, AUGHARNATH TEMPLE; HASTINAPUR÷

पाश्चिमी उत्तर प्रदेश में ईसाईयों विशेषकर कैथलिक समुदाम का एक आकर्षक पर्यटक स्थल मेरठ ज़िले में सरधना नामक परगना व तहसील जो हिण्डन व काली नदी के बीच स्थित है; जहाँ एक विख्यात कैथलिक चर्च है। मेरठ कैन्टोन्मेंट में स्थित कालीपल्टन मंदिर को ही अब औघड़नाथ मंदिर कहा जाता है। मेरठ मुख्यालय से दूर बूढ़ी गंगा के तट पर हस्तिनापुर नगरी जैनियों के धार्मिक पर्यटन केन्द्र के रूप में उभरी है। ये जगहें बाहरी पर्यटकों को सहज आकर्षित करती हैं।

सरधना चर्च:-

सरधना मेरठ मुख्यालय से पश्चिमोत्तर में 22 किमी॰ दूर है। किंवदन्ती है कि राजा सरकट ने इसे बसाया था। 'मयराष्ट्र मानस' में के॰सी॰ शर्मा ने लिखा है कि इस गाँव का नाम श्री धन नामक साधु के नाम पर पड़ा। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार सर वाल्टर रेनहार्ड समरू के नाम पर इसका नामकरण हुआ। सैनिक समरू ने भारत आकर नवाब सिराजुद्दौला, भरतपुर के राजा जवाहर सिंह तथा मुग़ल बादशाह शाह आलम की सेना में सेवा की थी; 1773 ई॰ में शाह आलम ने उसे सरधना की जागीर दी थी, बाद में उसे आगरा का गवर्नर बनाया गया, 1778 में उसकी मृत्यु हुई। उसकी बीबी फ़रज़ाना 'बेगम समरू' के नाम से उत्तराधिकारी बनी; फ़ादर मैटिक ने 'फ़ज़लों की माता की बसिलिका' में लिखा कि 1781 में योहाना के नाम से उसने बपतिस्मा लिया। 1809 में एक रोमन कैथलिक चर्च की नींव पड़ी जहाँ 1822 में बेगम ने इसका निर्माण कराया। सेंट्रल लंदन, जोन बन के चर्च की तर्ज़ पर इटालियन वास्तुकार संधनी रेघल्लीनी ने 4 लाख में 14 वर्ष में इसे तैयार किया था। इसमें संगमरमर का प्रयोग हुआ है, जिसे इटली से मंगाया था; तैयार होने पर बेगम ने पोप ग्रेगरी सोलहवें को लिखा था और इसके सौन्दर्य को कालजयी बयान किया था। चर्च के विशाल बरामदे में 18 स्तंभ हैं; अल्टारों के ऊपर 3 गुम्बद हैं जो रोम के सेंट पेट्रस के गिरजा से मेल खाते हैं। दो ऊँची मीनारें हैं, चिकनी स्लेट का अष्टकोणीय रोशनदान है, इसकी कलात्मकता इस्लामिक वास्तुकला का नमूना है। देखने में यह सलीब के आकार का है। मसीह के पाँच ज़ख़्मों की तर्ज़ पर शायद 5 ऊँची मीनारों पर ज़ख़्मों के निशान हैं। 1924 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने संरक्षित स्मारकों की श्रेणी में रखा और 1961 में इसे बसिलिका का दर्जा भी प्राप्त हुआ।

SARDHANA CHURCH

BEGUM SAMRU

इसके पास ऐतिहासिक कैथलिक क़ब्रगाह भी है जो मुस्लिम मक़बरों से मेल खाता है। यहाँ बेगम के फ्रेंच पति लैवेसेउ की 1795 की क़ब्र है, दूसरी क़ब्रें पिरामिडनुमा हैं जिनमें बेगम के अंग्रेज़, फ्रेंच, इटालियन, पुर्तगीज़ आदि विदेशी कर्मचारियों की क़ब्रें हैं। वहाँ बेगम के बेटे लुई बल्थाज़र, रीनहार्ड की पुत्री जुलिआना रेब, बेगम के दत्तक पुत्र डाईस की माँ की क़ब्रें बीच में हैं। चर्च के परिसर के बाहर सेंट जॉन सेमिनरी है जो बेगम का पुराना महल था जो 1773 के पहले का बना हुआ है और बहुत भव्य है। बेगम ने इसे इटली के सैनिक सोलारोली को भेंट कर दिया था जो स्वदेश लौटते समय इसे आगरा के डाइसिस को दान कर दिया था। वहीं बेगम का नया महल आज सेंट चार्ल्स इण्टर कॉलेज के नाम से है जिसे कभी 'दिलख़ुश कोठी' कहा जाता था। 1835 में इसे भी रेघल्लीनी ने बनाया था जहाँ बेगम बस 1 साल रह पायी; 1836 में उसकी मृत्यु हो गयी। इसके द्वार को शेर दरवाज़ा कहा जाता है जो लखोरी ईंटों से बना है। सरधना चर्च कुमारी मरियम

SARDHANA

को समर्पित है; मुख्य द्वार पर लैटिन में अंकित है। इसके निर्माण जुलियस सीज़र स्कॉट्टी थे। बेगम की क़ब्र पर शाही निर्माण है जिसमें हुक्का पीती बेगम की शानदार मूर्ति है। 8 नवम्बर को यहाँ वार्षिक तीर्थजैसा होता है। दूर-दूर से इसाई पर्यटक यहाँ आते हैं और प्रार्थनाएँ करते हैं।

KALI PALTAN TEMPLE

औघड़नाथ मंदिर: मेरठ कैन्टोनमेंट एरिया में 'काली पल्टन मन्दिर' के नाम से मशहूर महादेव शंकर का एक मंदिर है जो अब औघड़नाथ मंदिर भी कहलाता है। 1857 के विद्रोह के समय यह एक छोटा सा मंदिर था जहाँ देशी पैदल सिपाही रहते थे। श्रावण मास की शिवरात्रि में हज़ारों भक्त यहाँ काँवर चढ़ाने आते हैं। 10 मई को हर साल यहाँ क्रांति के शहीदों की याद में कार्यक्रम भी होते हैं। मंदिर के कूएँ पर भारतीय फ़ौज पानी भी पीती थी, कहा जाता है कि वहाँ के पुजारी ने चर्बी वाले कारतूसों को लेकर ताना दिया था। यहाँ एक शहीद स्मारक भी है जिसकी स्थापना जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा ने की थी। यहाँ अंग्रेज़ों का फ़ौजी ट्रेनिंग सेंटर था। गुप्त रूप से नहीं हाथी वाले बाबा भी आते थे। मराठों ने भी यहाँ लिंग पूजा की थी। देशी सैनिकों के नाते इसे काली पल्टन कहा जाता था। धीरे-धीरे यह एक धार्मिक तीर्थ के रूप में भव्यता ग्रहण करता जा रहा है। सावन और फाल्गुन में यहाँ धार्मिक पर्यटक बड़ी संख्या में पहुँचने लगे हैं।

SHWETAMBAR JAIN TEMPLE

हस्तिनापुर: मेरठ के पूर्वोत्तर में 48 किमी० दूर स्थित ऐतिहासिक नगरी हस्तिनापुर कभी कुरु राजधानी थी। 1887 में पुरातत्वशास्त्री कनिंघम और 1880 में फ़्यूहरर ने इसका सर्वेक्षण किया था। 1950 से 1952 तक प्रो० बी० बी० लाल ने उल्टा खेड़ा उर्फ़ विदुर का टीला की खुदायी करायी थी जहाँ से उन्हें चित्रित धूसर मृद्भाण्ड, नॉदर्न ब्लैक पोलिस वेयर व मुग़ल कालीन अवशेष मिले थे। पुरातत्वविदों ने इन्हे महाकाव्यकालीन माना और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इसे संरक्षित कर दिया है। आज यहाँ हस्तिनापुर पुरातत्व संग्रहालय भी बना है जहाँ उत्खनन में प्राप्त सामाग्रियाँ रखी हैं। परन्तु हस्तिनापुर आज एक जैन तीर्थ के रूप में विख्यात है। जैनी लोग इसे पहले तीर्थंकर ऋषभदेव का पारणा-स्थल कहते हैं और तीन तीर्थंकरों शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ व अरहनाथ के जन्म, दीक्षा व कैवल्य प्राप्ति की जगह मानते हैं। यहाँ बड़ा जैन मंदिर, पाण्डेश्वर मंदिर, द्रोपदेश्वर मंदिर व कर्ण मंदिर की इमारतें हैं। श्वेताम्बर जैनियों का मंदिर गुलाबचन्द ने बनवाया था जिसकी 1929 विक्रमी में जिन कल्याणसागर सूरि द्वारा प्रतिष्ठा की गयी थी। इसका पुनर्निर्माण आचार्य विजयवल्लभ सूरि की प्रेरणा से आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी की देख रेख में 2021 विक्रमी में हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति ने आचार्य विजयवल्लभ सूरि द्वारा प्रतिष्ठा करायी। यहाँ हरिविजय सूरिश्वर के शिष्य शांतिचन्द्रोपाध्याय ने 1945 विक्रमी में सोलहवें तीर्थंकर शांतिनाथ की प्रतिमा स्थापित करायी थी। उसी जगह 1682 विक्रमी में आचार्य विजयसेन सूरि द्वारा स्थापित मूर्तियाँ भी हैं तथा 1983 विक्रमी में आचार्य विजय वल्लभ सूरि द्वारा स्थापित मूर्तियाँ भी हैं। यहाँ 3 धर्मशालाएँ भी हैं जहाँ सैकड़ों पर्यटक ठहर सकते हैं। यहाँ ऋषभदेव का पारणा-कल्याणक मंदिर भी है जिसकी प्रतिष्ठा विजयवल्लभ सूरिश्वर के पट्टधर जिन विजयसमुद्र सूरि के पट्टधर

— 3

JAIN TEMPLE

आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरि ने 1978 ई० में करवई थी। सोलहवें और सतरहवें तीर्थंकरों के बारह कल्याणकों के मर्मरी चित्रपट्ट भी वहाँ लगे हैं। यहाँ दिगम्बर बड़ा मंदिर भी है जिसमें एक वेदी और 3 द्वार हैं, इसमें शांतिनाथ की सफ़ेद पत्थर की मूर्ति 1548 की बतायी जाती है। यहाँ से डेढ़ मील की दूरी पर एक टीले पर पुराना स्तूप है जहाँ जैन परम्परा का एक मंदिर है जिसमें चारों दिशाओं में ऋषभदेव के चार-चार चरण हैं। यहाँ श्वेताम्बर निशियां भी आकर्षक हैं। पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु जम्बूदीप बना है जहाँ सुमेरु पर्वत, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर और तेरह द्वीप समूह विकसित किये गये हैं; यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं जहाँ पर्यटक रुकते हैं। यहाँ पुस्तकालय व शोध केन्द्र भी है। जम्बूद्वीप में दूर-दूर से हज़ारों पर्यटक आते हैं; मनोरंजक-पर्यटन वाले यहाँ रोज़ आते हैं।

पुराने टीले के पास प्राचीन पाण्डुरेश्वर मन्दिर है जहाँ पाण्डवों की प्रस्तर-आकृतियाँ बनी हैं। लाल रंग के इस भग्न मंदिर का निर्माण सम्भवतः मराठों के समय हुआ था। समीप ही कर्ण मंदिर में दुर्गा व शिव की प्रतिमाएँ हैं, एक लिंग भी है, जिसके बारे कहा है कि कर्ण ने पूजा की थी। इसका भी निर्माण संभवतः मराठों के समय का है। बूढ़ी गंगा के तट पर एक मंदिर में शिवलिंग है, कहते हैं यहाँ द्रोपदी ने पूजा की थी; निकट ही द्रोपदी चीर हरण का दृश्य भी बना है। इसका भी निर्माण संभवतः मराठों ने कराया था। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने महाभारत संकुल योजना के तहत पाण्डुरेश्वर मंदिर, द्रोपदेश्वर मंदिर और द्रोपदी चीर धाम का सौंदर्यीकरण भी कराया है। मेरठ में सर्वाधिक पर्यटक विशेषकर जैन समाज के तीर्थयात्री हस्तिनापुर के पर्यटन में आकर्षित होते हैं।